الطريق إلى الجنة

eCard

الْاَحَادِيْثُ الْعَشَرَةُ فِيْ الْاَذْكَارِ الْمُشْتَهَرَةِ

عائض القرنى

AL-HUDA
Publishers (Pvt) Ltd

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

عَشْرُ اَحَادِيْثَ تُوْصِلُكُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ الْفِرْدَوْسَ الْاَعْلٰى

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَمَنْ وَّالَاهُ.

दस अहादीस जो अल्लाह के इज़्न से आपको जन्नत के आला दर्जे फ़िरदौस तक ले जा सकती हैं.

तमाम तारीफ़ें अल्लाह सुबहानहू व ताला के लिए हैं और दरूद व सलाम हो अल्लाह के रसूल ﷺ पर और आपकी आल पर और आप के असहाब पर और उस पर जो आप ही से दोस्ती रखे-व बाद

यह किताबचा اَلْاَحَادِيْثُ الْعَشَرَةُ فِى الْاَذْكَارِ الْمُشْتَهَرَة (मशहूर अज़कार की दस अहादीस) पर मुश्तमिल है। जिसमें मैं ने अज़कार पर मुश्तमिल एसी मुमताज़ अहादीस को मुन्तख़िब किया है जो अजर के ऐतबार से बहुत ही अज़ीम,फ़ज़ीलत के ऐतबार से बहुत ही अफ़ज़ल और सनद के ऐतबार से सही तरीन हैं। ताकि उनका हुसूल हर मुसलमान मर्द व औरत पर आसान हो,कुनबे के अफ़राद सफ़र और हज़र में इन अज़कार को बार-बार पढ़ें, दर्सगाहों में उनका एआदा हो और इल्म व ख़ैर और इस्लाह की हर मेहफ़िल में इन्हें दोहराया जाए।

लेहाज़ा आप सब इन अज़कार व अहादीस को याद कर लें और उस पर अमल भी करें उस ज़ात की क़सम ! जिसके हाथ में मेरी जान है यह अज़कार ख़ज़ानों से भी ज़्यादा महंगे,जमाशुदा दौलत से भी ज़्यादा क़ीमती,निशान ज़दा घोड़ों से भी ज़्यादा नफ़ीस और सुर्ख़ ऊँटों से भी ज़्यादा बेहतर हैं। बल्कि अजर अज़ीम सवाब कसीर और ज़बरदस्त इनआम के लिए करम वाले बादशाह,रहमान व रहीम की तरफ़ से ये आसमान व ज़मीन की कुंजियाँ हैं जिसने अपने बन्दों पर हमेशा क़ायम रहने वाली नेअमतों का वादा कर रखा है, मैं अपने लिए और हर उस शख़्स के लिए जो उन्हें पढ़ता,पढ़ाता,फैलाता और अमल करता है दुआगो हूँ कि अल्लाह ताला उसे अपनी रज़ा की कामयाबी से नवाज़े,जन्नत का घर अता करे और उसे नारे जहन्नम से बचाए-आमीन

Ten Ahadith that can take you to the high level of Jannah – *Al-Firdaws*, by the will of Allah

All praise is for Allah, and may the peace and blessings of Allah be upon His Prophet ﷺ and upon his followers, companions and upon the one who befriends him. And after that…

This booklet comprises of *'Al-aḥadith al-'asharatu fil adhkāril mushtaharati'* (ten ahadith on well-known *adhkār*). In it I have selected distinguished ahadith based on *adhkār* that are great in reward, perfect in virtue and well-established with respect to its authenticity. This is an effort to make these ahadith be conveniently available for every Muslim man and woman; so that members of a family can repeat them while travelling or during stay, in study circles as well as in gatherings of knowledge, goodness and reformation.

So memorize these ahadith and these *adhkār* and act upon them. By the One in Whose Hand is my soul! These *adhkār* are more valuable than treasures, more precious than heaps of wealth, more graceful than fine branded horses and better than red camels. Rather they are the keys of the heavens and the earth to attaining great reward, infinite recompense and extraordinary bestowal from a Generous King, the Entirely Merciful, the Especially Merciful – He Who has promised never-ending blessings for His slaves.

I supplicate to Allah for myself and everyone who reads it, teaches it and spreads it that He blesses us with the success of His pleasure, grants us a house in Paradise and saves us from the fire of Hell. *Amīn*.

1.عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ:اَلَا اَدُلُّكُمْ بِمَا اِنْ اَخَذْتُمْ بِهٖ اَدْرَكْتُمْ مَنْ سَبَقَكُمْ وَلَمْ يُدْرِكْكُمْ اَحَدٌ بَعْدَكُمْ،وَكُنْتُمْ خَيْرَ مَنْ اَنْتُمْ بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ،اِلَّا مَنْ عَمِلَ مِثْلَهٗ تُسَبِّحُوْنَ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ وَتَحْمَدُوْنَ ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ وَتُكَبِّرُوْنَ ثَلَاثًا وَثَلَاثِيْنَ وَتَقُوْلُ تَمَامَ الْمِائَةِ:لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ،لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ. (متفق علیه)

सैयदिना अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया:"क्या मैं तुम्हें ऐसी बात ना बताऊँ कि जिस पर अमल करके तुम उन लोगों के मर्तबे को पहुँच जाओगे जो तुम पर सब्क़त ले गए हैं और तुम्हारे बाद आने वाला तुम्हें नहीं पा सकेगा और तुम जिन लोगों में हो उनसे बेहतर हो जाओगे सिवाए उस शख़्स के जो उस जैसा अमल करे,तुम हर नमाज़ के बाद 33 बार سبحان الله 33 बार الحمدلله,33 बार الله اكبر कहो और ये कह कर सौ पूरा कर लो:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ،لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,बादशाहत उसी की है और हर क़िस्म की तारीफ़ भी उसी के लिए है और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है"।

Abu Hurairah رضي الله عنه narrated that the Prophet said, 'Shall I not tell you a thing upon which if you acted you would catch up with those who have surpassed you? Nobody would overtake you and you would be better than the people amongst whom you live except those who would do the same. After every prayer say: "Glory be to Allah" 33 times; "All praise be to Allah" 33 times; "Allah is the Greatest" 33 times; and complete the hundred with: "there is no true deity except Allah; the One and Only; there is no partner associated with Him; to Him belongs all Sovereignty and to Him belongs all Praise, and He over all things is Always

2.وَعَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ:مَنْ قَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ،لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ فِیْ كُلِّ يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ كَانَتْ لَهٗ عَدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ،وَكُتِبَتْ لَهٗ مِائَةُ حَسَنَةٍ،وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ،وَكَانَتْ لَهٗ حِرْزًا مِّنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهٗ ذٰلِكَ حَتّٰى يُمْسِيَ وَلَمْ يَاْتِ اَحَدٌ بِاَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهٖ اِلَّا اَحَدٌ عَمِلَ اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ. (متفق علیه)

और इन्हीं से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स हर रोज़ ये दुआ सौ मरतबा पढ़ेगा :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,बादशाहत उसी की है

और हर क़िस्म की तारीफ़ भी उसी के लिए है और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है"तो उसको दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब होगा, उसके लिए सौ नेकियाँ लिखी जाऐंगी और उसकी सौ बुराइयाँ मिटा दी जाऐंगी और उस दिन शाम तक वो शैतान के शर से महफ़ूज़ रहेगा,नीज़ कोई शख़्स उससे अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएगा सिवाए उस शख़्स के जो उससे ज़्यादा मर्तबा ये अमल करे"।

The same narrated that Allah's Messenger ق said, 'If one says one-hundred times in one day: "There is no true deity except Allah; the One and Only; there is no partner associated with Him; to Him belongs all Sovereignty and to Him belongs all Praise, and He over all things is Always All-Powerful", one will get the reward of manumitting ten slaves, and one-hundred good deeds will be written in his account, and one-hundred bad deeds will be wiped off or erased from his account, and on that day he will be protected from the morning till evening from Satan, and nobody will be superior to him except one who has done more than that which he has done.' [Agreed Upon]

3. وَعَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، فِيْ يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ، حُطَّتْ خَطَايَاهُ، وَاِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ. (متفق عليه)

और इन्हीं से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "जिस ने एक दिन में सौ मरतबा कहा سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ "अल्लाह पाक है और उसी की तारीफ़ है"- उसके तमाम गुनाह मिटा दिए जाते हैं ख़्वाह वो समुन्दर की झाग की मानिन्द हों"।

The same narrated that Allah's Messenger ق said, 'Whoever says: "Glory be to Allah, and praise be to Him" - one hundred times a day, will be forgiven all his sins even if they were as much as the foam of the sea.' [Agreed Upon]

4. وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: كَلِمَتَانِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيْلَتَانِ فِي الْمِيْزَانِ، حَبِيْبَتَانِ اِلَى الرَّحْمٰنِ: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ. (متفق عليه)

और इन्हीं से रवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "दो कलमे ऐसे हैं जो ज़बान पर बहुत हल्के फुल्के, मीज़ान में बहुत भारी और रहमान को बड़े ही प्यारे हैं: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ "अल्लाह पाक है और उसी की तारीफ़ है,अल्लाह पाक है बहुत अज़मत वाला"।

The same narrated that the Prophet ق said, 'There are two expressions which are very easy for the tongue to say, but they are very heavy in the balance and are very dear to The Beneficent (Allah), and they are: "Glory be to Allah, and praise be to Him and Glory be to Allah, the Most Great."' [Agreed Upon]

5. وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَنْ اَقُوْلَ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ

اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ.(رواه مسلم)

और इन्हीं से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ "पाक है अल्लाह और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है". कहना हर उस चीज़ से महबूब है जिस पर सूरज तुलूअ होता है"।

The same narrated that Allah's Messenger ﷺ said, 'The uttering of (these words): "Glory be to Allah; and praise be to Him, there is no true diety except Allah and Allah is the Greatest", is dearer to me than anything over which the sun rises.' [*Ṣaḥiḥ Muslim*]

6.وَعَنْهُ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ:مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا.(رواه مسلم)

और इन्हीं से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया:"जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजे अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता है"।

The same narrated that the Messenger of Allah ﷺ said: 'He who invokes Allah to send blessings on me once, Allah would bless him ten times.' [*Ṣaḥiḥ Muslim*]

7.عَنْ اَنَسٍ قَالَ: كَانَ اَكْثَرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: اَللّٰهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.(متفق عليه)

सैयदना अनस رضي الله عنه से रिवायत है फ़रमाया "नबी ﷺ की अक्सर दुआ ये हुआ करती थी: اَللّٰهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ "ऐ अल्लाह ! हमें दुनिया में भी भलाई अता

Anas رضي الله عنه narrated that the most frequent invocation of the Prophet ﷺ was: "O Allah! Give to us in the world that which is good and in the Hereafter that which is good, and save us from the torment of the Fire." [Agreed Upon]

8.عَنْ اَبِي مُوْسَى الْاَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ قَيْسٍ: اَلَا اَدُلُّكَ عَلٰى كَنْزٍ مِنْ كُنُوْزِ الْجَنَّةِ؟! قُلْتُ: بَلٰى يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.(متفق عليه)

सैयदना अबू मूसा अशअरी رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझ से फ़रमाया: "ऐ अब्दुल्लाह बिन क़ैस ! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में ना बताऊँ"? मैं ने कहा ज़रूर बताइए ऐ अल्लाह के रसूल, आप ﷺ ने फ़रमाया: (वो कलमा ये है) لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ "अल्लाह के सिवा किसी के पास ज़ोर और ताक़त नहीं है"।

Abu Musa Al-Ash'ari رضي الله عنه narrated that the Messenger of Allah ﷺ said to me: 'Shall I tell you a sentence which is one of the treasures of Paradise?' I said, 'Yes, O Allah's Messenger ﷺ!' He said, 'It is: "There is no might nor power except with Allah."' [Agreed Upon]

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

9. عَنْ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: سَيِّدُ الْاِسْتِغْفَارِ اَنْ تَقُوْلَ: اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، خَلَقْتَنِىْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْلِىْ اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.

(رواه البخارى)

सैयदना शदाद बिन औस رضي الله عنه से रिवायत है रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि सैय्यदुल इसतग़फ़ार ये है कि तुम कहो: "ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है,तेरे सिवा कोई माबूद नहीं,तू ने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ तुझसे किए हुए अहद और वादे पर क़ायम हूँ, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ हर बुराई से जो मैं ने की,मैं अपने ऊपर तेरी अता करदा नेअमतों का ऐतराफ़ करता हूँ और अपने गुनाह का ऐतराफ़ करता हूँ,पस मुझे बख़्श दे,यक़ीनन तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्श नहीं सकता"।

Shaddad bin Aus رضي الله عنه narrated that the Prophet said, 'The most superior way of asking for forgiveness from Allah is: "O Allah, You are my Lord; there is no true deity except You. You created me and I am your servant, I am upon your covenant and Your promise to the best of my ability. I seek refuge with you from the evil that I have done. I acknowledge Your bounties upon me and I acknowledge my sin, so forgive me, verily none forgives sins except You."'

10. عَنْ جُوَيْرِيَةَ بِنْتَ الْحَارِثِ قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَقَدْ قُلْتُ بَعْدَكِ اَرْبَعَ كَلِمَاتٍ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ لَوْ وُزِنَتْ بِمَا قُلْتِ مُنْذُ الْيَوْمِ لَوَزَنَتْهُنَّ: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ. (رواه مسلم)

सैय्यदा जवेरिया बिन्त हारिस رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया:"मैं ने तुम्हारे बाद चार कलमे तीन बार कहे हैं- अगर वो उन कलमात के साथ तोले जाऐं जो आज तुमने अब तक कहे हैं तो वो ही भारी होंगे سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ "पाक है अल्लाह और उसी की तारीफ़ है उसकी मख़्लूक़ की तादाद के बराबर,उसकी ज़ात की रज़ा के बराबर,उसके अर्श के वज़न और उसके कलमात की स्याही के बराबर।"

Jawairiyyah رضي الله عنه narrated that Allah's Messenger said, 'I recited four words three times after I left you and if these are to be weighed against what you have recited since morning these would outweigh them and (these words) are: "Glory be to Allah, and praise be to Him to the extent of the number of His creation and to the extent of His pleasure and to the extent of the weight of His Throne and to the extent of the ink of His words."' [*Ṣaḥiḥ Muslim*]

AL-HUDA Publications (Pvt) Ltd.
Post Box Number 444, Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
+918040924255. | +91-9535612224
www.alhudapk.com | **www.farhathashmi.com**